IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान भारतीय परिदृश्य में उर्दू भाषा की प्रासंगिकता

Dr. Shaista Nigareena

Assistant Professor, Education Department, Islamia Teacher's Training (B.Ed.) College, Phulwari sharif Patna, Bihar

सारांश

उर्दू भाषा एक इंडो-आर्यन भाषा है जिसका भारतीय उपमहाद्वीप में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। इसकी जड़ें मुगल काल से लेकर आधुनिक युग तक फैली हुई हैं। यह भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत, विशेष रूप से कविता और गद्य के लिए जानी जाती है। उर्दू केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, गंगा-जमुनी तहज़ीब और सामाजिक समरसता की प्रतीक रही है। भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में करोड़ों लोग उर्दू पढ़ते-लिखते व बोलते हैं। इस व्यापक शोध में कुछ महत्वपूर्ण घटकों की पहचान की गई है जो संबंधित क्षेत्र में उर्दू भाषा की स्थिति निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन विशेषताओं को उर्दू भाषा की वर्तमान स्थिति में योगदान देने वाले प्रभावशाली कारकों के रूप में माना जा सकता है। यह शोध पत्र वर्तमान भारतीय परिदृश्य में उर्दू भाषा की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। उर्दू भाषा भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा का अभिन्न अंग रही है। शोध में गुणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उर्दू भाषा आज भी सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है।

कुंजीपटल: उर्दू भाषा, भारतीय संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, मीडिया, तकनीकी युग

प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है जहाँ अनेक भाषाएँ और संस्कृतियाँ सह-अस्तित्व में हैं। उर्दू भाषा, भी इससे अछूता नहीं है, हिंदी के साथ इसके गहरे संबंध को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, भारतीय समाज में हिन्दवी, रेख्ता, गुजरी ने भले ही औपनिवेशी कारणों से आज उर्दू का स्वरुप ले लिया हो लेकिन सांस्कृतिक चेतना के स्तर पर यह अपनी जड़ें जमाई हुई है। भाषाई विभाजन ने भले इसे एक संप्रदाय से जोड़ कर देखा हो लेकिन वास्तव में यह जन समुदाय की भाषा है. इसका विकास मुग़ल काल से लेकर आधुनिक समय तक निरंतर होता रहा है। वर्तमान समय में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने भाषा के स्वरूप को बदल दिया है, तब उर्दू की प्रासंगिकता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। भाषा हमारे विचारों, सोच और मान्यताओं को संप्रेषित करने का माध्यम है। हम प्रतिदिन कुछ न कुछ सीखते हैं, और यह ज्ञानोदय के माध्यम से होता है। भाषा सीखना भी ज्ञानोदय का ही एक भाग है। सामान्यतः, लोग अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं को आसानी से सीख लेते हैं। किसी भी भाषा को सीखने के लिए एक उपयुक्त वातावरण और एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में आधिकारिक तौर पर 22 भाषाएँ सूचीबद्ध हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में, जहाँ कहा जाता है कि 'कोस-कोस में पानी बदले, चार कोस पर वाणी' ऐसे में लोग लोग स्वतः ही एक से अधिक भाषाएँ सीख लेते हैं। भाषा का बोध से गहरा संबंध है। हम सामान्यतः अपने बोधजन्य अनुभवों, विचारों और घटनाओं को किसी भी भाषा के माध्यम से दूसरों के साथ साझा करते हैं। भाषा स्मृति को आकार देकर व्यक्ति के बोध को भी प्रभावित करती है। सामान्यतः, छात्र ऐसी भाषाओं का चयन करते हैं जिनमें भविष्य में अच्छे अवसर हों। इन भाषाओं की बहुत मांग है, और इससे छात्रों को रोजगार बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी। भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में उर्दू का सातवाँ स्थान है। अकेले भारत में लगभग आठ करोड़ लोग उर्दू बोलते हैं।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त है, जिनमें से एक उर्दू भाषा भी है। उर्दू भाषा को भारत के कई राज्यों, जैसे तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल और दिल्ली में आधिकारिक भाषा के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। उर्दू भाषा पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा है और नेपाल की क्षेत्रीय भाषा मानी जाती है। लगभग 8 करोड़ भाषी लोगों के साथ उर्दू भाषा विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में 11वें स्थान पर है। उर्दू भाषा सबसे परिष्कृत भाषाओं में से एक है, जो शिष्टता और सुंदरता को परिभाषित करती है। उर्दू भाषा की कविता में आमतौर पर देखी जाने वाली इसकी अनूठी शैली में एक विशेष प्रकार की गरिमा का भाव व्यक्त होता है, जो इसे सामान्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ बनाता है।

गद्य और पद्य में छिपे अर्थों के माध्यम से यह आत्मा को इस प्रकार छूती है, जैसा कोई अन्य भाषा नहीं कर सकती। उर्दू दक्षिण एशिया की प्रमुख भाषा है और धीरे-धीरे अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी के साथ-साथ खाड़ी क्षेत्र में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। उर्दू नेपाल, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका में भी बोली जाती है। विश्व में लगभग एक अरब लोग उर्दू बोलते हैं। भारत में उर्दू की एक अनूठी विशेषता यह है कि इसके बोलने वाले किसी विशेष क्षेत्र में केंद्रित नहीं हैं, बल्कि पूरे देश में फैले हुए हैं। उत्तर भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश, जिसे इस भाषा का उद्गम स्थल माना जाता है, में उर्दू बोलने वालों की संख्या में गिरावट आई है। 2011 की जनगणना से पता चलता है कि उर्दू को अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, एक करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली सभी भाषाओं में से केवल उर्दू भाषा में ही गिरावट आई है।

यद्यपि राज्य की कुल जनसंख्या में काफी वृद्धि हो रही है, लेकिन उर्दू बोलने वालों की संख्या 4% से भी कम हो गई है। कोंकणी के अलावा, उर्दू एकमात्र अनुसूचित भाषा है जिसके बोलने वालों की संख्या में कमी दर्ज की गई है। उर्दू बोलने वालों की संख्या में यह रुझान पिछली जनगणना के आंकड़ों में देखा जा सकता है। 1971 में, उर्दू बोलने वालों की कुल संख्या 2.8 करोड़ आंकी गई थी। 1981 में यह संख्या बढ़कर 3.55 करोड़ हो गई। एक दशक बाद, यह 4.45 करोड़ तक पहुंच गई। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, उर्दू बोलने वालों की संख्या 5.16 करोड़ थी। जबकि 2011 की जनगणना में यह आंकड़ा घटकर 5.06 करोड़ हो गया।

2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, उर्दू भाषा सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में छठे स्थान पर थी, लेकिन 2011 की जनगणना में यह सातवें स्थान पर खिसक गई। उर्दू भाषा का किसी विशेष धर्म से कोई संबंध नहीं रहा है, और हाल के वर्षों में इसे विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा बोला जाता रहा है। यहां तक कि जितने लोग इसे अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराते हैं, उससे कहीं अधिक लोग उर्दू भाषा को अच्छी तरह से बोलते और समझते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, आजकल उर्दू भाषा को मुस्लिम समुदाय की भाषा के रूप में देखा जा रहा है। दक्षिण भारत में उर्दू भाषा की लोकप्रियता अन्य किसी भी स्थान से कम नहीं है। बड़ी संख्या में उर्दू भाषी आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में पाए जाते हैं। महाराष्ट्र में उर्दू भाषी लोगों की कुल संख्या 75.2 लाख है।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में 75 लाख लोग उर्दू भाषी हैं। कर्नाटक में 66.15 लाख लोगों ने उर्दू को अपनी मातृभाषा के रूप में पंजीकृत कराया है। इस प्रकार, उपरोक्त चार राज्यों को मिलाकर उर्दू भाषी लोगों की कुल संख्या 2.16 करोड़ से अधिक है। यह संख्या उत्तर प्रदेश के उर्दू भाषी लोगों की संख्या से लगभग दोगुनी है। उत्तर भारत में दो ऐसे राज्य भी हैं जहां आबादी का एक छोटा हिस्सा उर्दू भाषी है। इनमें मध्य प्रदेश और राजस्थान शामिल हैं, जहां उर्दू भाषी लोगों की कुल संख्या क्रमशः 9.15 लाख और 6.65 लाख है।

आम धारणा यह है कि उर्दू भाषा को केवल मुसलमान ही पढ़ते और समझते हैं। लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि सभी मुसलमान उर्दू को अपनी मातृभाषा मानते हों। उदाहरण के लिए, बिहार में 66.7% मुसलमान उर्दू को अपनी मातृभाषा मानते हैं, जबकि 43.3% मुस्लिम आबादी अन्य भाषाओं को अपनी मातृभाषा बताती है। कहा जाता है कि उर्दू भाषा मुसलमानों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है, फिर भी कई गैर-मुस्लिम भी स्कूली स्तर पर उर्दू पढ़ते हैं। क्यूकि उर्दू भाषा का अध्ययन करने वाले लोगों को इसमें निम्नाकित संभावनाएं नजर आती है। जिसके कारण वर्तमान भारतीय परिदृश्य में उर्दू भाषा की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

सांस्कृतिक पहचान: उर्दू भाषा सीखना अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जड़ों से जुड़ने का एक तरीका है। शायद यही वजह रही की महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के भाषाई साम्प्रदायीकरण और उसके राजनीतिकरण को पहचान लिया और उन्होंने 'हिन्दुस्तानी' दोनों लिपियों में लिखी जाने वाली भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने का प्रस्ताव रखा. हालांकि ऐसा संभव न हो सका और बाद के दिनों में उर्दू ने इस्लामी संस्कृति में एक महत्वपूर्ण भाषा के तौर पर अपनी पहचान बनाई. इसका उपयोग विभिन्न रूपों में भावनाओं, विचारों और कहानियों को व्यक्त करने के लिए किया जाता रहा है।

उर्दू भाषा सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का माध्यम है। यह भाषा हिंदू-मुस्लिम एकता और साझा संस्कृति का प्रतीक रही है। उर्दू ने विभिन्न समुदायों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा दिया है, जिससे सामाजिक सौहार्द मजबूत हुआ है। आज के समय में, जब समाज में विभाजन की प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं, उर्दू जैसी भाषाएँ एकता का संदेश देती हैं। उर्दू भाषा भारतीय संस्कृति की उस परंपरा को दर्शाती है, जहाँ विभिन्न धर्मों, भाषाओं और समुदायों का समन्वय देखने को मिलता है। यह भाषा हिंदू-मुस्लिम एकता, भाईचारे और सह-अस्तित्व का प्रतीक रही है। उर्दू के माध्यम से विकसित हुई गंगा-जमुनी तहज़ीब आज भी भारतीय समाज की पहचान है।

साहित्य की भाषा: पहली बार जॉन गिलक्रिस्ट के नेतृत्व द्वारा कलकत्ता के फ़ोर्ट विलियम कॉलेज(स्थापना १८००) में दो अलग-अलग साहित्य देखने को मिला जिसमें उर्दू गद्द के तौर पर 'बाग़-ओ-बहार(१८००-१८०२) मीर अम्मन की एवं आराइश-ए-महफ़िल (१८०२-१८०४) हैदर बक्श हैदरी की सामने आई वहीँ हिंदी भाषा में लल्लू लाल का 'प्रेम सागर' और सदल मिश्र का 'नासकेतो पख्यान' सामने आया। हालांकि ऐतिहासिक परिपेक्ष में देखें तो उस वक्त इस भाषा के पहले बड़े जन कवि, महान फ़ारसी कवि अमीर ख़ुसरो (१२५३-१३२५) हुए जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होने इस भाषा में दोहे, पहेलियां और कहमुकरनियाँ कहीं लेकिन उस वक्त इस भाषा को 'हिन्दवी' के रूप में जाना जाता था। इस तरह कविता, गद्य जैसे विभिन्न माध्यमों से उर्दू साहित्यिक संसार में अपना पैठ जमाने लगा। समय के साथ इसके अध्ययन करने वाले लोगों को शास्त्रीय और समकालीन उर्दू भाषा साहित्य का अध्ययन करने में रुचि जागने लगी, जिससे वे भाषा की गहराई और सुंदरता को समझ लगे। उर्दू का साहित्यिक महत्व अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली है। उर्दू साहित्य में ग़ज़ल, नज़्म, शायरी और कहानी की एक लंबी परंपरा रही है। मिर्ज़ा ग़ालिब, अल्लामा इक़बाल और फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ जैसे महान साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज, प्रेम, राजनीति और मानवता के विविध पहलुओं को अभिव्यक्त किया। आज भी उर्दू शायरी और अदब लोगों के बीच काफ़ी लोकप्रिय है साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मुशायरों तथा फिल्मों में इसका व्यापक उपयोग होता है।

धार्मिक और आध्यात्मिक संदर्भ: उर्दू भाषा का भारतीय उपमहाद्वीप में गहरा धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व है। हालांकि भाषा का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से यह इस्लाम धर्म के प्रचार, धार्मिक साहित्य के अनुवाद और सूफी परंपराओं का मुख्य माध्यम रही है। उर्दू भाषा का उपयोग सदियों से धार्मिक शिक्षाओं को संप्रेषित करने के लिए किया जाता रहा है, विशेष रूप से इस्लामी संदर्भों में। उर्दू, अरबी और फ़र्सी भाषाओं के मेल से बनी है। कुरान, हदीस और अन्य इस्लामी सिद्धांतों को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए उर्दू सबसे प्रमुख ज़रिया बनी। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया जैसे सूफी संतों ने अपने उपदेशों और प्रेम के संदेश को जन-भाषा में प्रसारित किया, जिसने आगे चलकर उर्दू भाषा के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया। सूफी शायरी और कव्वालियां आज भी ईश्वर-प्रेम (इश्क-ए-हकीकी) का संदेश देने के लिए उर्दू का ही उपयोग करती हैं। मदरसों में दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) का मुख्य आधार उर्दू ही है। इस्लामी साहित्य में पैगंबर मुहम्मद की स्तुति में लिखी जाने वाली 'नात', 'मन्कबत' और 'सलाम' मुख्य रूप से उर्दू भाषा में ही रचे जाते हैं। इसके अलावा, मुहर्रम के दौरान पढ़े जाने वाले 'मर्सिया' और 'नोहा' (जो इमाम हुसैन की शहादत की याद दिलाते हैं) उर्दू साहित्य के अनमोल हिस्से हैं।

भाषाई विविधता: भारत एक भाषाई विविधता वाला राज्य है ऐसे में उर्दू केवल एक धर्म तक सीमित नहीं है। मुंशी प्रेमचंद, फ़िराक़ गोरखपुरी और पंडित दयाशंकर 'नसीम' जैसे कई हिंदू और सिख कवियों ने उर्दू भाषा और साहित्य को समृद्ध किया है। यह भाषा मिली-जुली भारतीय संस्कृति और गंगा-जमुनी तहज़ीब की पहचान है। भाषाई समृद्धि न केवल संचार या संवाद के तौर पर इस्तेमाल होता है बल्कि यह ख़ुद की समझ और आत्मविश्वास को भी दर्शाता है। वही राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोज़गार के नए अवसर प्रदान करने में सहायक होता है।

शैक्षिक अवसर: वर्तमान परिदृश्य में तकनीक (डिजिटलाइजेशन) जिस रफ़्तार से क्षेत्रीय बोली-भाषा के क्षेत्र में काम कर रहा है यह उर्दू के लिए कई नए दरवाज़े खोल सकता है। जरूरत है हमे इसकी उपयोगिता को समझते हुए इसे रोज़गार की भाषा बनानी पड़ेगी। उर्दू भाषा में दक्ष लोगों के लिए पत्रकारिता, अनुवाद, शिक्षण और यहां तक कि राजनयिक भूमिकाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अवसर उपलब्ध है। शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में भी उर्दू का महत्व बना हुआ है। भारत के कई राज्यों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, और विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में उर्दू भाषा का अध्ययन-अध्यापन किया जाता रहा है। अनुवाद, पत्रकारिता, शिक्षा और सांस्कृतिक संस्थानों में उर्दू जानने वालों के लिए अनेकों अवसर उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष:

उर्दू भाषा की प्रासंगिकता केवल उसके अतीत तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य में भी उसका महत्व बना हुआ है। यह भाषा भारतीय संस्कृति, साहित्य, सामाजिक एकता और संचार का एक सशक्त माध्यम है। निस्संदेह, उर्दू भाषा के संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए सरकारी प्रयास किए गए हैं; फिर भी, यह स्पष्ट है कि इन प्रयासों से स्थानीय स्तर पर कोई ठोस लाभ नहीं मिला है। उदारीकरण के बाद के काल में उर्दू भाषा के प्रति समाज में उभरे विचार और दृष्टिकोण भाषा के विकास के लिए अनुपयुक्त माने जाते हैं। सरकार के लिए भाषा को समृद्ध करने के उद्देश्य से अधिक ठोस और रचनात्मक उपाय लागू करना अनिवार्य है, जिसमें समाज के सभी स्तरों के व्यक्तियों के लिए इसकी सुलभता सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। यह अनिवार्य है कि हम अपने क्षेत्र में उत्पन्न, विकसित और फली-फूली इस भाषा की गिरती स्थिति को पुनर्जीवित करने के लिए सामूहिक प्रयास करें। उर्दू भाषा के सामने चुनौतियाँ अवश्य हैं, लेकिन ये असंभव नहीं हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम उर्दू को केवल एक भाषा के रूप में न देखकर, एक साझा सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार करें और इसके संरक्षण व संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास करें। सही नीति, सामाजिक जागरूकता और तकनीकी विकास के माध्यम से इन चुनौतियों को अवसर में बदला जा सकता है। उर्दू की मिठास, उसकी साहित्यिक समृद्धि और सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम सभी मिलकर इसके संरक्षण और संवर्धन की दिशा में ठोस कदम उठाएँ।

सन्दर्भ सूची

➢ Census Data on Language Reveals a Surprise about Urdu Language. The Wire; 2011. available: https://thewire.in/culture/Urdu Language-census-language-2011-north-ind

➢ CENSUS of INDIA. "India-Language, Paper 1 of 201" Censusindia.gov.in; 2011. Available: https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/42458

➢ Begum, G., Ahmad, B., & Ansari, M. (2023). A Study on the Status of Urdu Language and Students' Perception of Urdu Language as a Subject in Kishanganj District of Bihar, India. Asian Journal of Language, Literature and Culture Studies, 6(3), 336-346.

➢ Arshad, W., Murtaza, H. G., Arshad, S., & Sanaullah, S. (2025). Challenges and prospects of Urdu language and literature in the 21st century: A cultural and linguistic perspective. Journal of Applied Linguistics and TESOL (JALT), 8(2), 1261-1272.

➢ Patel, M. A. I., & Ansari, M. A. (2009). Status of Urdu and Efforts and Strategies for Its Inclusion in the Mainstream of Indian Life. Language in India, 9(1).